शासन में सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा क्या है?

- नैतिक सिद्धांतों और नैतिकता की व्यापक समझ रखना सत्यनिष्ठा का गुण है।
- ईमानदारी, नैतिकता और अखंडता सत्यनिष्ठा के गुण हैं। यह उस नैतिक आचरण को संदर्भित करता है जो मानवीय मूल्यों का सम्मान करता है और निष्पक्षता, जवाबदेही और खुलेपन की गारंटी देता है, जो सभी लोगों के बीच विश्वास को प्रेरित करते हैं और शासन प्रक्रिया में भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं।
- शासन में सत्यनिष्ठा बनाए रखना भ्रष्ट या बेईमान कार्यों से परहेज करने से कहीं अधिक रखता है। यह उस नैतिक व्यवहार को संदर्भित करता है जो सामुदायिक आदर्शों को कायम रखता है और न्याय, जवाबदेही एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करता है, जो सार्वजनिक विश्वास को बढ़ावा देते हैं साथ ही, नागरिक जुड़ाव को बढ़ावा देते हैं।
- किसी के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में केवल अनैतिक या भ्रष्ट व्यवहार से बचने के विपरीत, सत्यनिष्ठा जीवन जीने के निरपेक्ष तरीके को दर्शाती है, जिसमें व्यक्ति उच्चतम लक्ष्यों और मानकों को कायम रखता है।

शासन में सत्यनिष्ठा क्या है?

- प्रोबिटी शब्द लैटिन 'प्रोबिटास' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "ईमानदार।"
- शासन में सत्यनिष्ठा की गारंटी के लिये भ्रष्टाचार की अनुपस्थिति एक मूलभूत आवश्यकता है।
- शासन में सत्यनिष्ठा वह शब्द है जिसका उपयोग शासन प्रक्रिया के अंदर मजबूत नैतिक मानदंडों के वर्णन करने के लिये किया जाता है। ईमानदारी, जवाबदेही, अखंडता, करुणा और अन्य सकारात्मक लक्षण उत्कृष्ट शासन के लिये सत्यनिष्ठ बनाते हैं।

शासन में सत्यनिष्ठा निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करती है:

- सत्यनिष्ठा सरकारी कार्यों में जनता के विश्वास को बनाए रखती है।
- सार्वजनिक सेवाओं में सत्यनिष्ठा ईमानदारी से बनी रहती है।
- सत्यनिष्ठा सरकार की जवाबदेही को प्रोत्साहित करती है।
- सत्यनिष्ठा गारंटी देती है कि प्रोटोकॉल का पालन किया जाता है।
- यह कदाचार, धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की संभावना से बचने का प्रयास करता है

लोक सेवाओं की अवधारणा क्या है?

- सार्वजनिक रूप से होने वाली सामाजिक गतिविधियों को सार्वजनिक सेवा के रूप में जाना जाता है। सार्वजनिक जीवन के मूलभूत सिद्धांतों पर विचार करते हुए सार्वजनिक सेवा में सिद्धांतों की आवश्यकता को स्वीकार करना चाहिये। एक नैतिक संहिता सार्वजनिक अधिकारियों को उनके आचरण में उच्चतम मानकों को बनाए रखने में मदद करने के लिये एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है।
- सार्वजनिक सेवा दैनिक जीवन के सभी हिस्सों को शामिल करती है जो सरकार प्रदान करती है, जैसे स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, बुनियादी ढांचा, और कानून और व्यवस्था।

लोक सेवाओं के सात सिद्धांत क्या हैं?

- **निस्वार्थता:**
  - सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति द्वारा जनहित में ही निर्णय लिये जाने चाहिये। अपने लिये, अपने परिवार या अपने दोस्तों के लिये धन या अन्य भौतिकवादी लाभ प्राप्त करने से बचना चाहिये।
- **अखंडता:**
  - सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति को बाहरी पार्टियों या समूहों के लिये खुद को किसी भी तरह के कर्ज में डालने से बचना चाहिये, जो उनके आधिकारिक दायित्वों को पूरा करने के तरीके को प्रभावित कर सकता है।
- **वस्तुनिष्ठता:**

- सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति को अपने कर्तव्य का पालन करते हुए योग्यता के आधार पर निर्णय लेना चाहिये, जैसे कि सार्वजनिक अधिकारियों की नियुक्ति करना, अनुबंध देना, या लोगों को पुरस्कार और भत्तों के लिये सुझाव देना।

- **जवाबदेही:**
  - सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति अपने निर्णयों और कार्यों के लिये जनता के प्रति जवाबदेह होते हैं और उन्हें जनता के सामने स्वयं या अपने कार्यालय, जो भी जांच के लिये उपयुक्त हो, को प्रस्तुत करना चाहिये।
- **खुलापन:**
  - सभी निर्णय और कार्य, जो सार्वजनिक हैं, के लिये पदाधिकारियों को यथासंभव पारदर्शी होने चाहिये। जब व्यापक जनहित में स्पष्ट रूप से इसकी आवश्यकता होती है, तो उन्हें अपनी पसंद के लिये औचित्य प्रदान करना चाहिये और केवल आवश्यक होने पर ही जानकारी को प्रतिबंधित करना चाहिये।
- **ईमानदारी:**
  - एक सार्वजनिक पदाधिकारी को किसी भी निजी हितों की घोषणा करनी चाहिये जिसका उसके कर्तव्यों के साथ संघर्ष हो सकता है और किसी भी संघर्ष को इस तरह से संबोधित करने के उपाय करना चाहिये जिससे सार्वजनिक हित की रक्षा हो।

शासन और सत्यनिष्ठा का दार्शनिक आधार क्या है?

- रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, बुद्ध चरित्र, अर्थशास्त्र, पंचतंत्र, मनु स्मृति, कुरल, शुक्र नीति, कादंबरी, राजा तरंगानी और हितोपदेश सहित भारतीय शास्त्रों और अन्य ग्रंथों ने शासन के नैतिक मुद्दों को बड़े पैमाने पर संबोधित किया है।
- इमैनुएल कांट दायित्व के विचार को नैतिकता के केंद्र में रखते हैं, यह तर्क देते हुए कि मनुष्य अन्य तर्कसंगत प्राणियों का सम्मान करने के लिये स्पष्ट अनिवार्यता का पालन करने के लिये बाध्य हैं, जिनके साथ वे तर्कसंगत प्राणियों के रूप में अपने कर्तव्य के बारे में जागरूकता से संपर्क में आते हैं। कांट का मानना था कि यदि समान तर्क तकनीकों को सख्ती से लागू किया जाए तो नैतिक दर्शन के मुद्दों से निपटना भी उतना ही सफल होगा ।
- उपयोगितावादी दृष्टिकोण, जो इस बात पर जोर देता है कि अधिकतम लोगों के लिये अधिकतम आनंद की प्राप्ति व्यवहार का मानक होना चाहिये।
- अरस्तू के अनुसार, सद्गुण (न्याय, दया और उदारता सहित) उन तरीकों से कार्य करने की प्रवृत्ति है जो उस व्यक्ति के लिये फायदेमंद हैं जो उनके पास है और जिस समुदाय के वे सदस्य हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQ)

Q. शासन में सत्यनिष्ठा से आप क्या समझते हैं? शब्द की अपनी समझ के आधार पर, सरकार में ईमानदारी सुनिश्चित करने के उपायों का सुझाव दीजिये। (150 शब्द)

Q. निम्नलिखित पर प्रत्येक 30 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये: (वर्ष 2022)

(i) संवैधानिक नैतिकता
(ii) हितों का टकराव
(iii) सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा
(iv) डिजिटलीकरण की चुनौतियाँ
(v) कर्तव्य के प्रति समर्पण

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/probity-in-governance